अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 51 अंक : 1 पौष-माघ वि.सं. 2080 जनवरी, 2024 सहयोग राशि- अठारह रुपये पृष्ठ-28 **RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x**

समिति में अंतर्राष्ट्रीय मानव एकजुटता दिवस का आयोजन

'अंतर्राष्ट्रीय मानव एकजुटता दिवस' पर राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति ने आज के संदर्भ में मानवाधिकार विषय पर विमर्श का आयोजन किया।

समिति ने यह विमर्श अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार एवं आरटीआई वॉच तथा शांति देवी फाउंडेशन के साथ मिलकर किया था।

बड़ी बात यह रही कि विमर्श में संख्या के लिहाज से भी महिलाओं की पुरुषों के बराबर भागीदारी रही। अकादमिक बोझिलपने से दूर मानवाधिकार के मुद्दों पर व्यावहारिक स्तर पर बहस में भागीदारी करते हुए महिलाएं पुरुष प्रतिभागियों पर भारी पड़ती दिखी।

एक लंबे अरसे बाद ऐसे किसी विमर्श में अकादमिक और बौद्धिक, जटिल और रूखे विमर्श की जगह प्रतिभागियों के बीच शिद्दत और जीवंतता से रोचक बहस हुई और नई दृष्टि मिली।

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के सचिव राजेन्द्र बोड़ा ने विषय प्रवर्तन किया जबकि की समिति की संयुक्त सचिव नीलम अग्रवाल तथा सहकर्मी बटीना मालिक व प्रेम गुप्ता ने महिलाओं के मानवाधिकारों पर समिति के कार्यक्रमों की चर्चा की।

कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता थे डॉ. प्रमिला संजय, श्रीमती अलका बत्रा, मनमोहन सिंह और दीपक शर्मा। कार्यक्रम के संयोजक अभिषेक सक्सेना थे। ❑

हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना,
आपस में दोउ लड़ी-लड़ी मुए, मरम न कोउ जाना।

– कबीर

कबीर कहते हैं कि हिन्दू राम के भक्त हैं और तुर्क (मुस्लिम) को रहमान प्यारा है। इसी बात पर दोनों लड़-लड़ कर मौत के मुंह में जा पहुंचे, तब भी दोनों में से कोई सच को न जान पाया।

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 51 अंक : 1 पौष-माघ वि.सं. 2080 जनवरी, 2024

क्र म

सर्दी का आगाज

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

संपादकीय

जनवरी का 30 वां दिन

प्रति वर्ष जनवरी का 30वां दिन हमारे लिये फिर से संकल्पबद्ध होने का होता है कि हम सत्य और अहिंसा पर आधारित समाज बनाने के लिये अपने प्रयासों को और तेज करें। यह दिन हमें झकझोर कर याद दिलाता है कि महात्मा गांधी द्वारा दिखाई गई सत्य, अहिंसा और भाईचारे की राह से हमें भटकना नहीं है। वही राह है जो हमें युद्धों और मानवीय त्रासदियों से बचा सकने की मंज़िल तक ले जा सकती है। जनवरी 1948 की 30 तारीख की शाम प्रार्थना सभा में जाते हुए बापू के नंगे सीने में पिस्तौल की तीन गोलियां उतारने वाले ने उनकी काया को तो निष्प्राण कर दिया किन्तु उनके विचारों को नहीं खत्म कर सका जो समूची दुनिया में समझदार लोगों को आज भी अनुप्राणित करते हैं।

गहरे मंथन के बाद अपना संविधान बना कर समता और न्याय पर आधारित देश और समाज बनाने का उपक्रम किये हमें 75 वर्ष हो गये, मगर अब भी ऐसा देश और समाज बहुतों को मरीचिका ही लगता है। हम दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने पर गर्व करते हैं किन्तु प्रति व्यक्ति आय पर नजर डालें तो असमानता का विराट पर्वत खड़ा नजर आता है। यह असमानता जनता में बेचैनी पैदा करती है जिसका नतीजा अपराधों और आत्महत्याओं की बढ़ती संख्या में उजागर होता है। देश की युवा पीढ़ी में भटकाव और वैचारिक शून्यता का भान दिखता है। देश में ऐसा मध्यम वर्ग जरूर उभरा है जो भौतिक दृष्टि से सफल नजर आता है और उसी के युवा वर्ग को नई अर्थ व्यवस्था अपने 'ब्रांड' के रूप में प्रस्तुत करती है। लेकिन स्वयं प्रधानमंत्री के शब्दों में देश में 80 करोड़ लोग अब भी गरीब हैं जिन्हें समता और न्याय पहुंचाने में शासन सफल नहीं हो पाया है।

निधन के तीन दिन पहले 27 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी ने लिखा था कांग्रेस वर्तमान स्वरूप में अपनी उपयोगिता खो चुकी है। इसे भंग कर दिया जाना चाहिए। मगर गांधी का मक़सद कांग्रेस को तिरोहित करना नहीं बल्कि उसे लोक सेवा के नये उपक्रम लोक सेवक संघ के रूप में फिर से खड़ा करने का था। महात्मा गांधी का ये आलेख 2 फरवरी, 1948 के 'हरिजन' के अंक में उनकी अंतिम वसीयत शीर्षक से छपा था।

उसी दिन 'हरिजन' में ही गांधी का एक और वक्तव्य भी छपा: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जो सबसे पुराना राष्ट्रीय राजनीतिक संगठन है, और जिसने कई लड़ाइयों के बाद

आजादी के लिए अपने अहिंसक तरीके से लड़ाई लड़ी है, उसे मरने नहीं दिया जा सकता। यह केवल राष्ट्र के साथ मर सकती है।

इन दोनों वक्तव्यों को जोड़ कर देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि महात्मा गांधी कांग्रेस को समाप्त नहीं करना चाहते थे बल्कि जन सेवा के लिए उसे नये क्रांतिकारी संगठन के रूप में खड़ा करना चाहते थे। एक ऐसा संगठन जिसके मूल में राज करना नहीं, लोक सेवा करना था। महात्मा गांधी के ये विचार उस परिपेक्ष्य में देखे जाने चाहिए जब आज़ादी के बाद कांग्रेस की भावी भूमिका को लेकर यह बहस चल रही थी। खुद पार्टी नेतृत्व ने 1946 में यह बहस इसलिए उठाई थी ताकि कांग्रेस देश में सामाजिक और आर्थिक क्रांति लाने के लिए अपने को वैसे संगठित कर सके। इस बारे में सभी प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों को चिट्ठी लिख कर विचार आमंत्रित किए गये थे।

मगर तब से अब तक गंगा नदी में न जाने कितना पानी बह चुका है। सेवा की राजनीति को सत्ता की राजनीति में तब्दील होते सबने देखा। यह ऐसा इसलिए हुआ कि क्योंकि हमने गांधी की तस्वीरें सरकारी ऑफिसों और न्यायालयों में लगा कर मान लिया कि हम उसके बताए रास्ते पर हैं। किन्तु हम अंधेरे में भटक गये। हमने गांधी के विचार की कठिन राह पर चलने की बजाय गांधी को मूर्तियों व तस्वीरों, और यहां तक कि करेंसी के नोटों पर सीमित कर देने की आसान राह चुनी।

हमनें सत्ता और पैसे की अंधी दौड़, जिसे कुछ समर्थवान ही जीत सकते थे, को चुना जिससे देश के विकास में अंत्योदय का भाव कहीं पीछे छूट गया। नई आई संपन्नता 140 करोड़ लोगों के देश मे थोड़ी सी आबादी के हाथों में जाती चली गई।

गांधी के जाने के बाद तीन पीढ़ियां गुज़र गईं। आज बहुतों को गांधी की सत्य और अहिंसा में कुछ भी श्रद्धा और निष्ठा नहीं है। ये वे लोग हैं जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों से टूट गए हैं या किन्ही विगत रूढ़ियों और दांतकथाओं में मत्त हैं। भले ही आज़ादी के बाद देश में वैसी समता और बंधुत्व वाली सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाएं नहीं बनाई जा सकी जैसी गांधी ने कल्पना थी फिर भी गांधी को मानने वाले निराशा और हताश नहीं हैं। उनके लिये गांधी विचार के रूप में आज भी हमारे साथ हैं। इसीलिए अब ही वह सही समय है जब गांधी के सोच का साझा करने वाले सभी लोग सीना तान कर खड़े हो जाएं और कहें हम उन चुनौतयों का सामना करने को कटिबद्ध हैं। गांधी ने तो विरासत में हमें अपने व्यक्तित्व की आभा, अपने साहस का गौरव, अपने आचरण की शानदार गाथा संभलाई है। सिर्फ उनके पद-चिन्हों पर चलने की जरूरत है।

गांधी जैसे लोगों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाता। शांति के इस मसीहे का दाहसंस्कार एक महान् योद्धा को दिए जाने वाले सम्मान के साथ हुआ, यह नन्हा दुबला मानव उन सभी योद्धाओं से महान् था जिन्होंने सैनिक प्रयाण किए थे। वह उन सबसे बहादुर था। अपनी विजय में उसने सभी योद्धाओं को पीछे छोड़ दिया।

गांधी ने आपना नश्वर शरीर त्याग कर उस कार्य के लिए अमरत्व प्राप्त कर लिया जो उसे सर्वाधिप्रिय था। मगर सत्य, अहिंसा और प्रेम पर आधारित समाज बनाने का काम अभी अधूरा है और उसे नई पीढ़ी को करना है। ❑

लेख

शिक्षक की भूमिका अन्य नौकरीपेशा कर्मी जैसी नहीं होती

❑

हमें नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षक सिर्फ हमारे जैसे लोग नहीं हैं जो मान्यता प्राप्त औपचारिक संस्थानों, जैसे स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, में पेशेवर शिक्षकों का काम करते हैं और भौतिकी, गणित और इतिहास जैसे शैक्षणिक विषय पढ़ाते हैं। वास्तव में, मानव जाति के महान शिक्षकों ने इन औपचारिक संस्थानों के बाहर पढ़ाया है; वे डीलिट् और पीएचडी वाले नहीं हैं; वे भविष्यवक्ता, रहस्यवादी, कवि, क्रांतिकारी हैं।

मैं मुख्य रूप से औपचारिक शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों पर ध्यान केंद्रित करूंगा, जहां गुणों का एक समूह विकसित करना चाहता हूं, जो मुझे लगता है, शिक्षण के व्यवसाय की विशेषता होनी चाहिए। सच है, शिक्षकों के पास विविध संस्थागत स्थान होते हैं – कुछ स्कूलों में पढ़ाते हैं, और कुछ विश्वविद्यालयों में पढ़ाते हैं – और ये स्थान अलग-अलग चुनौतियाँ पेश करते हैं।

स्कूलों में दो प्राथमिक कारक शामिल हैं। वहां फूलों से निपटना होता हैं जो अभी खिलना शुरू हुए हैं। इस खिलने को संभव बनाने के लिए शिक्षक को अत्यधिक देखभाल करने की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, बच्चे के संज्ञानात्मक विकास, उसके विकास के मानसिक चरण, उसकी शारीरिक/महत्वपूर्ण/भावनात्मक ऊर्जा, उसकी स्वतंत्रता और जिम्मेदारी की भावना, या, कहें तो, उसके 'चरित्र निर्माण' पर ध्यान दिया जाना चाहिए। का। दूसरा, एक शिक्षक को प्रारंभिक स्तर पर ज्ञान परंपराओं में रुचि पैदा करनी चाहिए जिसके लिए बहुत अधिक शैक्षणिक संवेदनाओं की आवश्यकता होती है। हालाँकि, विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के सामने चुनौतियों का एक अलग सेट होता है। उदाहरण के लिए, स्कूली शिक्षकों के विपरीत विश्वविद्यालय के शिक्षक 'परिपक्व' वयस्कों के साथ काम करते हैं जो स्कूली शिक्षा की लंबी प्रक्रिया के बाद आए हैं। इसलिए कहा जाता है कि 'चरित्र निर्माण' या 'नैतिक विकास' अब उनका काम नहीं है। चूंकि वह अकादमिक विषयों को काफी ऊंचे स्तर पर पढ़ा रहा होता हैं तो वह खुद को एक शिक्षक के बजाय एक शोधकर्ता के रूप में अधिक देखना शुरू कर देता है। लेकिन मैं जिस बात की वकालत करने की कोशिश कर रहा हूं वह यह है कि

❑
अविजित पाठक

लेखक जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं। ❑ सं.

इन मतभेदों के बावजूद, सामान्य विशेषताओं का एक समूह है जो उन्हें एकजुट करता है और शिक्षण के व्यवसाय को एक विशिष्ट अर्थ देता है। शिक्षण एक नैतिक कार्य है क्योंकि यह साझा करने का कार्य है, स्वामित्व का नहीं। जब आप पढ़ाते हैं तो आप स्वयं को समर्पित करते हैं – अपनी ऊर्जा, अपनी प्रेरणा, अपनी अवधारणाएँ/ जानकारी/सिद्धांत/तथ्य; इस संचारी क्रिया में ही आपको अपने व्यवसाय का अर्थ मिलता है। प्रत्येक शिक्षक जानता है कि जितना अधिक वह देता है, उतना अधिक वह प्राप्त करता है, उसकी अवधारणाएँ उतनी ही अधिक विकसित और तीक्ष्ण होती हैं। वास्तव में, एक आदर्श कक्षा में संवाद का नैतिक कार्य होता है।

शिक्षण रिश्तों की एक कला है – एक ऐसा बंधन जो शिक्षक और सिखाए गए दोनों की आत्माओं को छूता है। इसे समझने की कोशिश करें। भले ही एक शिक्षक नौकरी कर रहा है, और अपना वेतन कमा रहा है, यह गुणात्मक रूप से अलग तरह का काम है। आप पैसे निकालने के लिए बैंक आते हैं; आप बैंकर के पास जाते हैं, अपना निकासी फॉर्म देते हैं और वह आपको पैसे दे देता है। अधिकांश समय बैंकर के साथ आपका रिश्ता यहीं समाप्त हो जाता है। आप एक स्कूल में आएं। आपका साहित्य शिक्षक आपको कविता सिखा रहा है। यह आपको नकदी देने जैसा नहीं है – जिस तरह बैंकर करता है। यहां शिक्षक संवाद कर रहे हैं, जीवन, प्रकृति, गहरे मानवीय अनुभवों के बारे में बात कर रहे हैं; और यह आपको प्रभावित करता है; और

एक शिक्षक को प्रारंभिक स्तर पर ज्ञान परंपराओं में रुचि पैदा करनी चाहिए जिसके लिए बहुत अधिक शैक्षणिक संवेदनाओं की आवश्यकता होती है। हालाँकि, विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के सामने चुनौतियों का एक अलग सेट होता है।

जब आप उसके कंपन पर प्रतिक्रिया करते हैं, तो इसका प्रभाव शिक्षक पर पड़ता है। और यह चलता रहता है। यह एक बंधन बनाता है; कक्षा एक अवसर होती है जिसके माध्यम से छात्र शिक्षक के करीब आता है; वे एक-दूसरे की परवाह और भरोसा करने लगते हैं। इसी तरह, भले ही आप किसी विश्वविद्यालय में हों, और अपने शोध छात्रों के साथ काम कर रहे हों; यह आपकी थीसिस पर अध्यायों, संदर्भों और तकनीकी/ बौद्धिक टिप्पणियों के साथ समाप्त नहीं होता है। इस बंदन में दोनों ही उत्थान और पतन, आशा और निराशा के क्षणों से गुजरते हैं; और अक्सर, शिक्षक एक परामर्शदाता बन जाता है; और छात्र उसका विश्वसनीय मित्र बन जाता है जिसे वह किसी भी कठिनाई के क्षण में बुला सकता है। यह रिश्ता इस व्यवसाय को एक विशिष्ट अर्थ देता है। यह केवल सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक का तकनीकी कार्य नहीं है; यह मानव आत्माओं को प्रभावित करता है; इसका प्रभाव सर्वव्यापी है. आप केवल भौतिकी और भूविज्ञान ही नहीं पढ़ाते; आप जीवन से जुड़ते हैं। भौतिकी और भूविज्ञान तो आपको ऐसा करने में सक्षम बनाते हैं।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि डर, सीखने की संस्कृति को नष्ट कर देता है। कक्षा प्रेम और स्वतंत्रता से भरा वातावरण होती है जो शिक्षार्थी को अपनी क्षमता को विकसित करने, प्रयोग करने और प्रकट करने की अनुमति देता है। अवश्य ही उसे इसे मार्गदर्शन, मददगार हाथ और उत्प्रेरक की जरूरत होती है। यह भूमिका शिक्षक निभाता है। इसी अर्थ में एक शिक्षक को कुछ प्राधिकार धारण करने होते हैं; लेकिन यह अधिकार पाशविक शक्ति नहीं होती। वह शक्ति उसकी देखभाल, चिंता, ज्ञान और बुद्धिमत्ता से उत्पन्न होती है। यह अधिकार शिक्षार्थी को यह एहसास करने में सक्षम बनाता है कि प्रेम ही सर्वोच्च अधिकार है; और स्वतंत्रता अनुशासन का सर्वोत्तम रूप है। सच है कि हम ऐसे माहौल में बड़े हुए हैं जिसने हमें यह सोचने पर मजबूर किया कि प्रेम और अधिकार, स्वतंत्रता और अनुशासन विरोधाभासी हैं। हमें इसे भूलना होगा।

शिक्षण निरंतर सीखना है। एक शिक्षक एक छात्र ही रहता है क्योंकि छात्रत्व का अर्थ है शाश्वत जिज्ञासा, सीखने की उत्सुकता, विकास करना। यदि कोई शिक्षक सोचता है कि वह अंततः आ गया है, उसका अंतिम शब्द है, और सीखने के लिए कुछ भी नया नहीं है, तो वह एक अच्छा शिक्षक बनना बंद कर देता है क्योंकि वह बढ़ना बंद कर देगा। अगर मैं सतर्क हूं, अगर मैं हर पल बढ़ रहा हूं, तो हर अवसर सीखने का क्षण होता है। मेरा मानना है कि एक शिक्षक एक बच्चा ही रहता है, जो हमेशा विकसित होने और बढ़ने के लिए तैयार रहता है। जड़ता हो या

निष्क्रियता, अहंकार हो या निरपेक्ष ज्ञान की भावना, यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की गतिशीलता को नष्ट कर देती है। हमेशा विश्वास रखें कि एक शिक्षक एक छात्र है; एक छात्र एक शिक्षक है।

शिक्षक साझा करने के नैतिक कार्य में संलग्न होता है, दूसरे शिक्षक छात्रों के साथ एक संवादात्मक संबंध में संलग्न होता है, तीसरे शिक्षक प्यार और दृढ़ विश्वास से अधिकार प्राप्त करता है, और चौथे शिक्षक दुनिया के निर्माण/पुन:निर्माण के लिए आत्म-अन्वेषण के कार्य में छात्रों के साथ विनम्र रूप से लगातार जुड़ा रहता है। लेकिन ये शिक्षक कहाँ हैं? सच है, इन विशेषताओं वाले शिक्षक ढूँढ़ना कठिन है। मेरा मानना है कि इसका पहला कारण शिक्षा मशीनरी को मानता हूं, अर्थात उसका बढ़ता नौकरशाहीकरण है। नौकरशाहीकरण का तर्क रचनात्मकता और विशिष्टता को यांत्रिक/मानक फॉर्मूले से बदल देता है। प्रमाणपत्र और डिग्री शिक्षण की भावना से अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। कल्पना कीजिए कि टैगोर जैसा कोई व्यक्ति भारत के किसी स्कूल में शिक्षण की नौकरी के लिए आवेदन कर रहा है। उसके लिए इसे प्राप्त करना असंभव है क्योंकि, जैसा कि स्कूल प्रबंधन उसे बताएगा कि उनके पास बी.एड की डिग्री नहीं है। और तो और, हमारे जैसे देश में इन डिग्रियों का भी कोई खास मतलब नहीं है; अधिकांशतः इन्हें कदाचार के माध्यम से या विशुद्ध रूप से रटकर प्राप्त किया जाता है - शिक्षा की प्रथाओं के प्रति संवेदनशील बनने के लिए नहीं, बल्कि नियमित मासिक वेतन के साथ नौकरी पाने के लिए। इसका परिणाम यह होता है कि एक शिक्षक बिना प्रेरणा, बिना आग, बिना मिशन वाला एक वेतनभोगी कर्मचारी बनकर रह जाता है। इसके अलावा, शिक्षक को एक मशीन के पुर्जेके समान समझा जाता है; बच्चों के बीच प्रसारित किए जाने वाले ज्ञान की सामग्री को चुनने में वह शायद ही कभी सार्थक भूमिका निभाता है; न ही उसे निर्धारित की जाने वाली किताबों, या बच्चों की रचनात्मकता को जगाने के लिए उपयुक्त मूल्यांकन के पैटर्न पर ज्यादा कुछ कहने का अधिकार है। लगभग सब कुछ तय होता है। एक केंद्रीकृत नौकरशाही बोर्ड ने पहले ही सब कुछ तय कर लिया होता है।

इन दिनों स्कूल शिक्षकों को क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है, इसके बारे में निर्देश देने के लिए प्रबंधन कौशल वाले गैर सरकारी संगठनों को नियुक्त किया जाता हैं। एक शिक्षिक - 'उच्च अधिकारियों' और बच्चों के बीच मध्यस्थ के रूप में अपना सीमित/परिभाषित कार्य करता है। इसके तीन विनाशकारी परिणाम होते हैं। सबसे पहले, जैसे-जैसे शिक्षिक रचनात्मकता खोता जाता है, वह कक्षा में एक पुलिस अधिकारी या तानाशाह की तरह बन जाता है; कक्षा का प्रबंधन और कृत्रिम व्यवस्था और अनुशासन बहाल करना उसकी मुख्य चिंता बन जाती है। दूसरा, रजिस्टर बनाए रखना, छात्रों के प्रदर्शन को रिकॉर्ड करना, पाठ्यक्रम पूरा करना - एक औसत शिक्षक के लिए नीरस दिनचर्या के इस चक्र से परे देखना मुश्किल है। एक शिक्षक एक क्लर्क की तरह हो जाता है। तीसरा, चूंकि अत्यधिक प्रतिस्पर्धी दुनिया में सिस्टम 'सफलता' के लिए बच्चों पर अत्यधिक दबाव डालता है, निजी ट्यूटर्स, कोचिंग सेंटर और ट्यूटोरियल होम की संस्कृति सर्वव्यापी हो जाती है। यह एक और परिवर्तन की ओर ले जाता है। एक शिक्षक एक 'निजी शिक्षक' बन जाता है जो 'नोट्स' या सफलता के लिए कोई जादुई फॉर्मूला तैयार करता है। जो लोग काफी होशियार होते हैं वे खुद को पैसा कमाने वाली मशीन के रूप में देखना शुरू कर देते हैं। दूसरा कारण एक दुष्चक्र में देखना होगा। चूँकि प्रणाली एक शिक्षक को वेतनभोगी कर्मचारी में बदल देती है, और व्यवसायों की रैंकिंग की एक उच्च स्तरीकृत प्रणाली में उसका स्थान बहुत ऊँचा नहीं देखा जाता है, वह अपना आत्म-सम्मान खो देता है। इसके अलावा, जितना अधिक वह इसे खोता है उतना ही वृहद समाज उसे कुछ अधिक घृणा की दृष्टि से देखने लगता है।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि डर, सीखने की संस्कृति को नष्ट कर देता है। कक्षा प्रेम और स्वतंत्रता से भरा वातावरण होती है जो शिक्षार्थी को अपनी क्षमता को विकसित करने, प्रयोग करने और प्रकट करने की अनुमति देता है। अवश्य ही उसे इसे मार्गदर्शन, मददगार हाथ और उत्प्रेरक की जरूरत होती है। यह भूमिका शिक्षक निभाता है। इसी अर्थ में एक शिक्षक को कुछ प्राधिकार धारण करने होते हैं; लेकिन यह अधिकार पाशविक शक्ति नहीं होती।

कई भारतीय कॉलेज और विश्वविद्यालय हतोत्साहित शिक्षकों, उदासीन छात्रों और राजनीतिक रूप से नियुक्त कुलपतियों से भरे हुए हैं। यहां कोई सार्थक शिक्षण नहीं है, कोई रचनात्मक शोध नहीं है और कोई अकादमिक जीवंतता नहीं है। यह संकट अक्सर धनी वर्ग को देश में विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश की मांग करने के लिए प्रेरित करता है। दुःख की बात है कि इस भ्रष्टाचार के कारण एक राष्ट्र के रूप में हमें अभी तक आत्म-सम्मान प्राप्त नहीं हुआ है। कब तक हमें हर चीज़ 'विदेशी' पर निर्भर रहना पड़ेगा? हां, भारतीय शिक्षक इस दुष्चक्र में फंस गए हैं; उनमें से कई आत्म-सम्मान और व्यावसायिक गौरव से रहित हैं। मुझे लगता है कि मुख्यतः यही कारण है कि हम खुद को ऐसे शिक्षकों के बीच पाते हैं जो व्यवसाय की भावना, उसकी गरिमा और गरिमा के अनुरूप नहीं हैं जिसके बारे में बुबेर और फ्रेयर जैसे लोगों ने बात की थी।

विश्वविद्यालय संकाय का आदर्श प्रोफ़ाइल तेजी से बदल रहा है। जैसे-जैसे किसी संकाय के कैरियर की संभावना तय करने में प्रकाशनों, परियोजनाओं और सम्मेलनों को अधिक महत्व मिलना शुरू हो गया है, छात्रों के साथ गहन शैक्षणिक/आकर्षक/सार्थक संवाद के रूप में शिक्षण अपना महत्व खो रहा है। शिक्षण और सार्थक अनुसंधान के बीच एक समन्वित संबंध बनाने के बजाय, इन दिनों एक विश्वविद्यालय संकाय खुद को एक 'शोधकर्ता' (और अनुसंधान का अर्थ प्रकाशन) के रूप में देखने के लिए प्रलोभन या दबाव महसूस करता है। परिणामस्वरूप, शिक्षण में गर्व, उसका आनंद, उसके विशुद्ध रूप से गैर-उपयोगितावादी क्षण और उसका गैर-मापने योग्य अनुभव हमारी चेतना से गायब होते दिख रहे हैं। एक विश्वविद्यालय संकाय एक विशेषज्ञ, एक विषय विशेषज्ञ, एक परियोजना व्यक्ति, एक धन जुटाने वाला प्राधिकारी बन रहा है, लेकिन जरूरी नहीं कि वह एक शिक्षक हो। यह बहुत बड़ी क्षति है। एक और बात है जिस पर विचार करने की जरूरत है कि जैसे-जैसे विश्वविद्यालय-विशेष रूप से निजी विश्वविद्यालय- आक्रामक रूप से बाजार-संचालित होते जा रहे हैं, छात्र उपभोक्ताओं ('कौशल' के उपभोक्ता जो आकर्षक नौकरियां दिलाते हैं) की तरह बन रहे हैं, और शिक्षक खुद को 'कौशल-प्रदाता' के रूप में अपनी कल्पना कर रहे हैं; ऐसे रिश्ते में कोई साम्य नहीं है; यह तकनीकी/औपचारिक है; यह प्रेम के बिना, कृतज्ञता के बिना, स्मृति के बिना है।

एक शिक्षक एक क्लर्क की तरह हो जाता है। तीसरा, चूंकि अत्यधिक प्रतिस्पर्धी दुनिया में सिस्टम 'सफलता' के लिए बच्चों पर अत्यधिक दबाव डालता है, निजी ट्यूटर्स, कोचिंग सेंटर और ट्यूटोरियल होम की संस्कृति सर्वव्यापी हो जाती है। यह एक और परिवर्तन की ओर ले जाता है। एक शिक्षक एक 'निजी शिक्षक' बन जाता है जो 'नोट्स' या सफलता के लिए कोई जादुई फॉर्मूला तैयार करता है।

ये कठिनाइयाँ वास्तविक और ठोस हैं। फिर भी, हम सभी महसूस करते हैं कि इन बाधाओं के बावजूद, शिक्षकों को हमारे बीच रहना चाहिए। शिक्षक संचारक होते हैं, एक दीपक लेकर चलते हैं, और हमें अपने मन के अंधेरे को दूर करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जिस समाज ने अपने शिक्षकों को खो दिया है वह एक पतनशील समाज है, भले ही वह आर्थिक रूप से कुशल और तकनीकी रूप से कुशल हो।

ऐसे समाज में, जो डेविड रिज़मैन की भाषा में 'अन्य-निर्देशित' होता जा रहा है (जब मीडिया के चश्मे, नवीनतम फैशन, नवीनतम जानकारी, नवीनतम गैजेट कमजोर दिमागों के विचारों को आकार देते हैं) शिक्षक खुद को असहाय पाते हैं। लेकिन यही कारण है कि उन्हें स्पष्टता के साथ, बुद्धिमत्ता के साथ, दृढ़ विश्वास के साथ खुद को फिर से खोजना पड़ेगा। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। दूसरी चुनौती उन जटिल विरोधाभासों की है जो हमारे समकालीन अस्तित्व के सामने हैं। हम मॉल और आत्मघाती हमलावरों, वैश्वीकरण और धार्मिक कट्टरवाद, आभासी अंतरंगता और जीवन/आमने-सामने संचार की अनुपस्थिति के बीच रहते हैं। यहां एक ऐसी दुनिया है जहां सिज़ोफ्रेनिया, मानसिक अवसाद और विभाजित व्यक्तित्व का खतरा अधिक है। हम इस दुनिया को कैसे समझें, इसके विरोधाभासों को कैसे दूर करें और एक अधिक स्वस्थ समाज की ओर कैसे बढ़ें? इन चिंतनों के लिए समाज को शिक्षकों की आवश्यकता है, ज्ञानवान शिक्षकों की। ❑

एक टीचर जिसे पढ़ना नहीं आता था!

❑

❑

जॉन कोरकोन

अमरीका के न्यू मेक्सिको में 40–50 के दशक में पले-बढ़े छह भाई-बहनों में एक जॉन कोरकोरन का एक राज़ है जो उनके स्कूल, कॉलेज और 17 साल के टीचिंग करियर में किसी को पता नहीं चल पाया। इतने साल उन्होंने इसे छुपा कर रखा कि दरअसल, उन्हें पढ़ना ही नहीं आता था। उनकी कहानी उनकी जुबानी सुना रही है बीबीसी संवाददाता साराह मैक्डरमट जिन्हें उन्होंने अपना हाल सुनाया। ❑सं.

बचपन में मेरे मां-पापा मुझे कहते थे कि मैं एक विजेता हूं और ज़िंदगी के पहले 6 साल तक मैं इस बात पर यकीन भी करता रहा। मैंने बोलना थोड़ा देर से सीखा, लेकिन बड़ी उम्मीदों के साथ ये सोचकर स्कूल गया कि अपनी बहनों की तरह पढना-लिखना सीखूंगा। पहले साल तो सब ठीक रहा क्योंकि ज़्यादा कुछ करना नहीं होता था, लेकिन दूसरे साल हमें पढ़ना सीखना था। लेकिन मेरे लिए ये ऐसा था जैसे मेरे सामने कोई चीनी भाषा का अख़बार खुला हुआ है। मुझे कोई लाइन समझ ही नहीं आती थी। एक 6-7 साल के बच्चे के लिए अपनी ये दिक्कत समझना आसान बात भी नहीं थी।

मुझे याद है कि मैं रात को सोते वक्त भगवान से प्रार्थना करता था कि प्लीज़ भगवान, काश मैं सुबह उठूं और मुझे पढ़ना आ जाए। कभी-कभी तो मैं फिर उठकर किताब भी खोलकर देखता कि शायद चमत्कार हो गया हो। लेकिन कोई चमत्कार नहीं हुआ।

मैं स्कूल नहीं, जंग पर जाता था। मैं 'नालायक बच्चों की लाइन' में बैठने लगा। ये वो बच्चे थे जिन्हें मेरी तरह ही पढ़ने-लिखने में दिक्कत होती थी। मुझे नहीं पता कि मैं वहां कैसे पहुंचा, मुझे नहीं पता था कि बाहर कैसे निकलूं और मुझे बिलकुल नहीं पता था कि क्या सवाल पूछूं।

हमारे टीचर्स इसे नालायक बच्चों की लाइन नहीं कहते थे। लेकिन बच्चे इसे ऐसा कहते थे और जब आप नालायक बच्चों वाली लाइन में होते हो तो आप नालायक ही महसूस करने लगते हो।

पेरेंट-टीचर मीटिंग में मेरे टीचर ने मेरे मां-पापा को बताया, ये बहुत तेज़ बच्चा है, ये सीख जाएगा। हर साल टीचर ऐसा कहते और मुझे अगली क्लास में दाखिला दे देते। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था।

जब मैं पांचवीं क्लास में आया तो मैंने पढना सीखने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। मैं रोज़ सुबह उठता, तैयार होता और स्कूल जाता जैसे किसी युद्ध पर जा रहा हूं। मुझे क्लास से चिढ़ थी।

सातवीं क्लास के दौरान तो मैं दिन भर प्रिंसिपल के दफ़्तर में ही बैठा रहता था। मैं लड़ता था, मैं जोकर था, विद्रोही था, क्लास को डिस्टर्ब करता था. स्कूल से निकाला भी गया। लेकिन मैं अंदर से ऐसा नहीं था। मैं ऐसा बनना नहीं चाहता था। मैं अच्छा विद्यार्थी बनना चाहता था। बस, बन ही नहीं पा रहा था।

लेकिन आठवीं क्लास तक आते-आते मैं खुद को और अपने परिवार को शर्मिंदा करते-करते थक चुका था। मैंने फैसला किया कि अब मैं ठीक से बर्ताव करूंगा। मैं खिलाड़ी बनना चाहता था। मुझमें खिलाड़ी की प्रतिभा थी। मेरा गणित अच्छा था। स्कूल शुरू करने से पहले ही मैं पैसे गिनना सीख गया था।

मैं अपना नाम लिख सकता था और कुछ और शब्द लेकिन पूरा वाक्य नहीं लिख पाता था। मैं हाई स्कूल में था लेकिन एक दूसरी-तीसरी क्लास के बच्चे के स्तर का ही पढ़ पाता था। मैंने कभी किसी को नहीं बताया कि मैं पढ़ नहीं पाता। धोखे से पास होता रहा। इम्तिहान के समय मैं किसी और के पेपर में देखता या किसी और को अपना पेपर लिखने को दे देता। लेकिन जब मैं खेल की स्कॉलरशिप पर कॉलेज में दाखिला लेकर गया तो इतना आसान नहीं था।

पुराने प्रश्नपत्र मिल जाते थे। एक ये भी तरीका था इम्तिहानों से निपटने का। किसी ऐसे पार्टनर के साथ क्लास में जाता था जो मेरी मदद कर सके। कई प्रोफेसर ऐसे थे जो हर साल वही प्रश्नपत्र इस्तेमाल करते थे।

एक बार एक प्रोफेसर ने 4 सवाल बोर्ड पर लिख दिए। मैं क्लास में पीछे बैठा था, खिड़की के पास।

मेरे पास मेरी नीली उत्तर-पुस्तिका थी और मैंने चारों सवाल लिख लिए। मुझे नहीं पता था कि उन सवालों का मतलब क्या है। मैंने पहले ही अपने एक दोस्त को बाहर खिड़की के पास खड़ा कर रखा था। वो स्कूल का सबसे तेज़ विद्यार्थी था। मैंने खिड़की से उसे अपनी उत्तर-पुस्तिका पकड़ाई ताकि वो मेरे लिए जवाब लिख सके। मेरी शर्ट में एक और उत्तर-पुस्तिका छुपाई हुई थी, मैंने उसे निकाला और लिखने का नाटक करने लगा। मैं पास होने के लिए इतना पागल हो रहा था।

एक बार तो मैंने रात को प्रोफेसर के दफ्तर में घुस कर प्रश्नपत्रों की चोरी भी की। चोरी के बाद मैं एक बार तो खुश हुआ कि मैं कितना चालाक हूं, इतना मुश्किल काम कर लिया लेकिन उसके बाद अपने घर आकर रोने लगा। मैंने क्यों किसी की मदद नहीं मांगी। क्योंकि मुझे लगता था कि कोई मेरी मदद नहीं कर सकता। कोई मुझे पढ़ना नहीं सिखा सकता।

उसके बाद एक बार तो मैंने रात को प्रोफेसर के दफ्तर में घुस कर प्रश्नपत्रों की चोरी भी की। चोरी के बाद मैं एक बार तो खुश हुआ कि मैं कितना चालाक हूं, इतना मुश्किल काम कर लिया लेकिन उसके बाद अपने घर आकर रोने लगा। मैंने क्यों किसी की मदद नहीं मांगी। क्योंकि मुझे लगता था कि कोई मेरी मदद नहीं कर सकता। कोई मुझे पढ़ना नहीं सिखा सकता।

मेरे अध्यापकों ने, मेरे मां-बाप ने मुझे यही बताया था कि कॉलेज डिग्री के बाद अच्छी नौकरी मिलती है। मैंने भी इसी बात पर यकीन किया। मेरे दिमाग में बस डिग्री का कागज़ हासिल करना था।

ग्रेजुएशन भी हो गई। कॉलेज में अध्यापकों की भी कमी थी, इसलिए मुझे अध्यापक की नौकरी का प्रस्ताव मिला। ये बहुत बेतुका था कि जिस मुश्किल से मैं निकला, अब मैं फिर से उसी में जा रहा था। मैंने ये नौकरी क्यों की? स्कूल और कॉलेज में मैं पकड़ा नहीं गया और इसलिए मुझे टीचर की नौकरी में छिपे रहने का अच्छा विकल्प लगा। किसको शक होता कि एक टीचर को पढ़ना नहीं आता।

मैंने बहुत सी चीज़ें पढ़ाईं मैं खेल सिखाता था। सोशल साइंस विषय पढाया। मैंने टाइपिंग भी सिखाई। मैं एक मिनट में 65 शब्द टाइप कर लेता था लेकिन मुझे पता नहीं था कि मैं क्या टाइप कर रहा हूं। मैंने कभी ब्लैकबोर्ड पर नहीं लिखा। हम क्लास में बहुत सी फ़िल्में देखते थे और खूब चर्चाएं करते थे।

इस बीच मेरी शादी भी हो गई। मैंने शादी से पहले अपनी पत्नी को सच

बताने की सोची। मैंने उसे बताया कि मैं पढ़ नहीं सकता। लेकिन उसे लगा कि मैं कह रहा हूं कि मुझे किताबों में ज्यादा दिलचस्पी नहीं है। शादी हो गई और हमारी बेटी भी हुई।

एक दिन ये राज़ मेरी पत्नी के सामने खुला जब मैं अपनी 3 साल की बेटी को किताब से पढ़ कर कहानी सुना रहा था। मैं खुद से कहानियां बना कर उसे सुना रहा था क्योंकि किताब की कहानी मैं पढ़ नहीं पा रहा था। जब मेरी पत्नी ने सुना तब उसे सच्चाई का पता चला लेकिन उसने मुझे कुछ नहीं कहा और मेरी मदद करती रही।

मुझे मैं नालायक लगता था। मुझे मैं फर्ज़ी लगता था। मैं धोखा दे रहा था। मैं अपने बच्चों को सच के रास्ते पर चलना सिखा रहा था जबकि उस क्लास में सबसे बड़ा झूठा मैं ही था।

आखिरकार मैंने पढ़ना सीखा। मैंने 1961 से लेकर 1978 तक हाई स्कूल में पढ़ाया। नौकरी छोड़ने के 8 साल बाद मेरी ज़िंदगी में बदलाव आया। तब मैं 47 साल का था जब मैंने अमरीका के उप-राष्ट्रपति की पत्नी बारबरा बुश को टीवी पर वयस्कों की शिक्षा पर बोलते सुना। मैंने पहले किसी को इस पर बोलते नहीं सुना था और मुझे लगता था कि मैं एक अकेला ही इस स्थिति का शिकार हूं।

एक दिन एक स्टोर में दो महिलाएं अपने व्यस्क भाई की पढ़ाई को लेकर बात कर रही थीं जो लाइब्रेरी पढ़ने जाता था। वो पढ़ना सीख रहा था। एक शुक्रवार की शाम मैं भी लाइब्रेरी पहुंच गया और साक्षरता कार्यक्रम के निदेशक से मिला। मैंने उन्हें बताया कि मैं नहीं पढ़ पाता। मेरी ज़िंदगी की वो दूसरी इंसान थी जिन्हें मैंने ये राज़ बताया था।

मुझे वहां 65 साल की एक ट्यूटर मिलीं। वो टीचर नहीं थीं लेकिन उन्हें पढाना अच्छा लगता था। शुरूआत में उन्होंने मुझे वो लिखने को कहा जो मेरे दिल में है। मैंने सबसे पहले एक कविता लिखी। जो मैं महसूस करता था, उस पर कविता लिखी। कविता के बारे में खास बात है कि आपको पूरे वाक्य लिखने की ज़रूरत नहीं होती है।

मेरी ट्यूटर ने मुझे एक छठी क्लास के स्तर तक का पढ़ना सिखा दिया। लेकिन मुझे सात साल लगे खुद को साक्षर महसूस करने में। जब मैंने पढ़ना सीख लिया तो मैं बहुत रोया। इस सीखने की यात्रा में बहुत हताशा हुई, दर्द हुआ लेकिन मेरी आत्मा में पड़े एक बड़े गड्ढे को अब मैंने भर लिया था।

48 साल तक जैसे मैं अंधेरे में रहा। लेकिन आखिरकार मैंने अपने 'भूत' से छुटकारा पा लिया। ❑

(बीबीसी संवाददाता साराह मैक्डरमट से बातचीत पर आधारित)।

रपट

अंग्रेजी अध्ययन के राजस्थान संगठन का सम्मेलन

राजस्थान एसोसिएशन फॉर स्टडीज इन इंग्लिश का २० वां वार्षिक सम्मलेन उदयपुर के मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में सम्पन्न हुआ। तीन दिन चला यह सम्मेलन मुख्यतः आदिवासी संस्कृति पर केंद्रित रहा जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये विद्वानों ने अकादमिक विमर्श किया। विमर्शों की श्रंखला में अकादमिक और साहित्यिक हस्तियां शामिल हुईं।

उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व आइपीएस अधिकारी और जाने-माने लेखक हरी राम मीणा थे जबकि मुख्य वक्ता गुजरात के जाने माने कवि और आदिवासी साहित्य के अध्येता प्रो. कानजी भाई पटेल थे। मोहन लाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. शरद श्रीवास्तव ने एस. एन. जोशी मेमोरियल व्याख्यान दिया जबकि केमरून, अफ्रीका, से आये डॉ. जेराल्डीन सिन्यू ने भी एक विशेष व्यख्यान दिया। तकनीकी सत्रों में लगभग पैतालीस शोध पत्र प्रस्तुत किये गए। सम्मेलन के दौरान आदिवासी जीवन पर आधारित वृत्त चित्रों के प्रदर्शन का भी एक विशेष सत्र आयोजित किया गया।

संभागियों ने उदयपुर के निकट के गांवों में जाकर वहां के निवासियों से उनके जीवन की कठिनाईयों और उनकी समृद्ध संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त की।

राजस्थान एसोसिएशन फॉर स्टडीज इन इंग्लिश के उपाध्यक्ष प्रो हेमेन्द्र चण्डालिया का सम्मेलन में सम्मान किया गया। ❑

नया साल

देखिए पाते हैं उश्शाक़ बुतों से क्या फ़ैज़।
इक बरहमन ने कहा है कि ये साल अच्छा है।।
-मिर्ज़ा ग़ालिब

न शब ओ रोज़ ही बदले हैं न हाल अच्छा है।
किस बरहमन ने कहा था कि ये साल अच्छा है।।
- अहमद फ़राज़

जिस बरहमन ने कहा है कि ये साल अच्छा है।
उस को दफ़नाओ मिरे हाथ की रेखाओं में।।
- क़तील शिफ़ाई

दुल्हन बनी हुई हैं राहें।
जश्न मनाओ साल-ए-नौ के।।
- साहिर लुधियानवी

पुराने साल की ठिठुरी हुई परछाइयाँ सिमटीं।
नए दिन का नया सूरज उफ़ुक़ पर उठता आता है।।
- अली सरदार जाफ़री

तू नया है तो दिखा सुब्ह नई शाम नई।
वर्ना इन आँखों ने देखे हैं नए साल कई।।
- फ़ैज़ लुधियानवी

इसी फ़रेब में सदियां गुज़ार दी हमने।
गुज़िश्ता साल से शायद ये साल बेहतर हो।।
- मैराज फ़ैज़ाबादी

किसी को साल-ए-नौ की क्या मुबारकबाद दी जाए।
कैलन्डर के बदलने से मुक़द्दर कब बदलता है।।
- ऐतबार साजिद

न कोई रंज का लम्हा किसी के पास आए।
ख़ुदा करे कि नया साल सब को रास आए।।
- फ़रियाद आज़र

यकुम जनवरी है नया साल है।
दिसम्बर में पूछूँगा क्या हाल है।।
- अमीर क़ज़लबाश

नया साल दीवार पर टाँग दे।
पुराने बरस का कैलेंडर गिरा।।
- मौहम्मद अल्वी

इक साल गया इक साल नया है आने को।
पर वक़्त का अब भी होश नहीं दीवाने को।।
- इब्न-ए-इंशा

इक अजनबी के हाथ में दे कर हमारा हाथ।
लो साथ छोड़ने लगा आख़िर ये साल भी।।
- हफ़ीज़ मैरठी

कुछ ख़ुशियाँ कुछ आँसू दे कर टाल गया।
जीवन का इक और सुनहरा साल गया।।
- अज्ञात

अब के बार मिल के यूँ साल-ए-नौ मनाएँगे।
रंजिशें भुला कर हम नफ़रतें मिटाएँगे।।
- अज्ञात

फिर आ गया है एक नया साल दोस्तो।
इस बार भी किसी से दिसम्बर नहीं रुका।।
- अज्ञात

नया साल आया है ख़ुशियाँ मनाओ।
नए आसमानों से आँखें मिलाओ।।
- अज्ञात

कुछ ख़ुशियाँ कुछ आँसू दे कर टाल गया।
जीवन का इक और सुनहरा साल गया।।
- अज्ञात

इक साल गया इक साल नया है आने को
पर वक़्त का अब भी होश नहीं दीवाने को
- इब्न-ए-इंशा

इक अजनबी के हाथ में दे कर हमारा हाथ
लो साथ छोड़ने लगा आख़िर ये साल भी
- हफ़ीज़ मैरठी

चेहरे से झाड़ पिछले बरस की कुदूरतें
दीवार से पुराना कैलन्डर उतार दे
- ज़फ़र इक़बाल
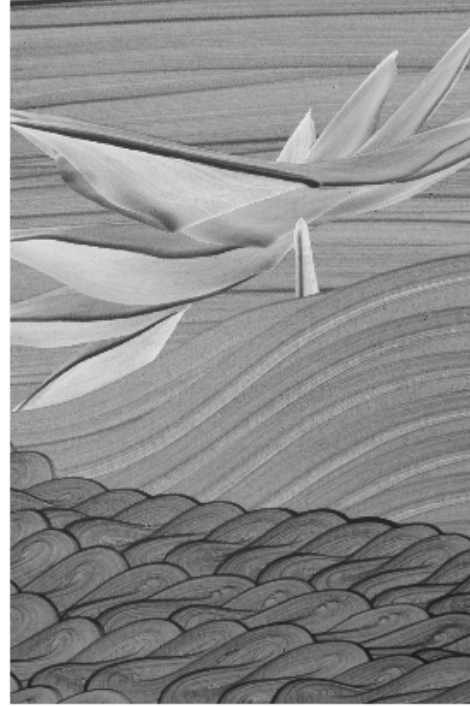
हिन्दू समाज द्वारा बहिष्कृत हो जाने पर भी हिन्दू ही बना रहूंगा!
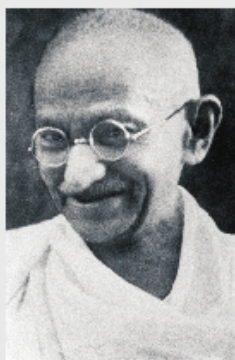
महात्मा गांधी

चूंकि मैं पूर्ण अहिंसा में विश्वास रखता हूं और उसकी हिमायत करता हूं इसलिए कुछ लोगों ने तो मुझे हिन्दू मानने तक से इनकार कर दिया है। उनका कहना है कि मैं प्रछन्न ईसाई हूं। मुझसे बड़े असंदिग्ध स्वर में कहा गया है कि 'भगवद्गीता' का यह अर्थ करना कि उसमें विशुद्ध अहिंसा धर्म का उपदेश किया गया है, 'गीता' के अर्थ का अनर्थ करना ही है।

मेरे कुछ हिन्दू भाई मुझसे कहते हैं कि अमुक परिस्थिति में 'भगवद्गीता' ने हिंसा को धर्म बताया है। अभी हाल ही में एक उद्भट विद्वान सज्जन ने 'गीता' की मेरी व्याख्या पर नाक-भौं सिकोड़ते हुए कहा कि 'गीता' के बारे में कुछ टीकाकारों के इस मत का कोई उचित आधार नहीं है कि 'गीता' में दैवी और आसुरी शक्तियों की बीच होने वाले सनातन संघर्ष का चित्रण है और तनिक भी संकोच या दुर्लभता दिखाए बिना अपने आंतरिक कशमकश को दूर कर देना हमारा कर्तव्य बताया गया है।

अहिंसा के खिलाफ इन तमाम विचारों को इतने विस्तार से देने का प्रयोजन यह है कि सांप्रदायिक समस्या का जो समाधान मैं बताने जा रहा हूं, लोग अगर उसे समझना चाहते हैं तो इन विचारों को हृदयंगम कर लेना जरूरी है। मैं आज अपने चारों ओर जो कुछ देख पा रहा हूं, वह तो अहिंसा-प्रसार के विरुद्ध उत्पन्न प्रतिक्रिया है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि हिंसा की एक जबरदस्त लहर उठी चली आ रही है। हिन्दू-मुस्लिम तनाव अहिंसा के प्रति अरुचि का उग्र रूप है।

इस सवाल का विचार करते समय मेरा खयाल ही न रखा जाये। मेरा धर्म तो मेरे और मेरे सिरजनहार के बीच की बात है। अगर मैं हिन्दू हूं तो सारे हिन्दू समाज के द्वारा बहिष्कृत हो जाने पर भी मैं हिन्दू ही बना रहूंगा। इतना तो मैं कहता ही हूं कि धर्मों का पर्यवसान अहिंसा में है।

परंतु मैंने लोगों के सामने अहिंसा के परमरूप को कभी रखा ही नहीं - भले ही इसका कारण केवल इतना ही हो कि मैं अपने-आपको इस योग्य नहीं मानता कि उस प्राचीन संदेश को संसार के समक्ष रखूं। यद्यपि बुद्धि के धरातल पर मैंने अहिंसा के उस परम स्वरूप को पूरी तरह समझ लिया है और ग्रहण कर लिया है, लेकिन वह अभी मेरे रोम-रोम में भिदा नहीं है। मेरी शक्ति का आधार इतना ही है कि जिस बात को मैंने खुद अपने जीवन में बार-बार आजमा कर नहीं देख लिया है उस पर

आचरण करने के लिए दूसरों से नहीं कहता। तो मैं आज अपने देश भाइयों से अनुरोध करता हूं कि वे सिर्फ़ दो उद्देश्यों के लिए अहिंसा को अपने अंतिम धर्म के रूप में अपना लें - एक तो विभिन्न जातियों के पारस्परिक संबंधों के नियमन के लिए और दूसरे, स्वराज्य प्राप्त करने के लिए। हिंदुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, सिखों और पारसियों को अपने आपसी मतभेदों के निबटारे के लिए हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिये; और हमें स्वराज्य अहिंसात्मक तरीके से प्राप्त करना चाहिये। इस मैं भारत के सामने कमजोरों के हठी हार के तौर पर नहीं, बल्कि बलवानों के हथियार के तौर पर पेश करने की हिम्मत रखता हूं। धर्म के मामले में जोर-जबरदस्ती न हो, इसके बारे में हिन्दू और मुसलमान दोनों बातें तो बहुत करते हैं, लेकिन कोई हिन्दू एक गाय की जान बचाने के लिए अगर किसी मुसलमान की जान ले ले तो इसे जबरदस्ती नहीं तो और क्या कहेंगे? यह तो किसी मुसलमान को जबरन हिन्दू बनाने की कोशिश करना ही हुआ। उसी तरह अगर मुसलमान हिंदुओं को मस्जिद के सामने गाने बजाने से जबरदस्ती रोकने की कोशिश करें तो वह भी जबरदस्ती नहीं तो और क्या है? खूबी तो इस बात में है कि शोरगुल के बावजूद आदमी परमात्मा की प्रार्थना में तल्लीन हो जाये। दूसरे लोग हमारी धार्मिक भावनाओं का खयाल रखें इसके लिए अगर हम जोर-जबरदस्ती करेंगे तो भावी पीढ़ियां हमें अधर्मी और जंगली ही मानेगी। फिर तीस करोड़ संख्या वाले राष्ट्र का सिर्फ़ एक लाख अंग्रेजो को होश में लाने के लिए हिंसा करने पर मजबूर हो जाना शर्म की बात है। उन लोगों के हृदय-परिवर्तन करने या अगर आपकी मर्जी उन्हें देश से निकाल देने की ही हो तो हमें इसके लिए शस्त्रबल की नहीं, मनोबल की जरूरत है। अगर हम में यह मनोबल नहीं होगा तो हम शस्त्रबल भी नहीं जुटा पायेंगे और जब हम में मनोबल आ जायेगा तो हम देखेंगे कि शस्त्रबल की हमें जरूरत ही नहीं है।

इस तरह उपर्युक्त उपदेशों के लिए अहिंसा-धर्म को स्वीकार कर लेना हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए सबसे अधिक स्वाभाविक और परम आवश्यक शर्त है। इसके जरिए हम अपने समाज के संयुक्त शरीरबल को अपेक्षाकृत अच्छे कामों में लगाना सीखेंगे। आज तो हम उसे भी-भी की निरर्थक लड़ाई में, जिसमें दोनों ही दल बिल्कुल टूट जाते हैं, नष्ट किए जा रहे हैं। इसके अलावा, जब तक सम्पूर्ण राष्ट्र का समर्थन प्राप्त न हो, हर शस्त्र-विद्रोह पागलपन ही है और अगर राष्ट्र का पूरा-पूरा समर्थन प्राप्त हो तो असहयोग कार्यक्रम का कोई भी अंग एक बूंद खून बहाये बिना हमें अपने उद्देश्यों तक पहुंचा सकता है। ❑

(29.05.1924/गांधी वांग्मय, खंड 24)

नये साल की बधाई

नये साल की लाया हूं मैं
गीतों भरी बधाई।
रंगबिरंगे सपनों वाली धरती
की जय भाई।।
अभी दूर है मंज़िल अपनी
मिल कर क़दम बढ़ाओ
तीन रंग की विजय पताका
दिशा दिशा फहराओ
गर्मी सर्दी वर्षा तो हैं, ऋतुओं
की परछाई।
साथ समय के चलने वाली
भारत की तरुणाई।।
नहीं किसी से बैर भाव
हम न्याय चाहने वाले
एक डाल पर हंसते गाते
हम पंछी मतवाले
जान सका है कौन भला मानव
मन की गहराई।
साहस वाले लांघ सकेंगे विपदाओं
की खाई।।
नये नये संकल्प हमारे
नये देश की वाली
आपस के झगड़ों से बढ़कर
मातृभूमि कल्याणी
अपनेए ढफली सभी बजाते
समझो पीर पराई।
आजादी की गंगा देखो गांव गांव
में आई।।

\- **वेद व्यास**

लेख

आत्म परिचय से आत्म कल्याण का उपदेश

❑

❑

डॉ. ओम प्रकाश टाक

शिक्षक लेखक उस व्यक्तित्व का अनुभव करा रहे हैं जो महात्मा गांधी की प्रेरणा का भी स्रोत था। ❑सं.

इन दिनों मैं अपने निजगृह में श्रीमद् प्रभु के दर्शन दो तस्वीरों के माध्यम से करता हूँ – एक तस्वीर में वे पद्मासन में विराजे ध्यानस्थ मुद्रा में दिखाई देते हैं तो दूसरी तस्वीर में वे अपनी शांत प्रशांत मन:स्थिति में युवा मोहनदास को सत्संगति प्रदान करते हुए दिखाई देते हैं। पहली तस्वीर में श्रीमद् प्रभु की छवि मोक्षप्रार्थी साधक की है और दूसरी तस्वीर में लोककल्याण के आकांक्षी महापुरुष की। इन दोनों तस्वीरों का संदेश यह है कि एक सच्चा संत मात्र स्वयं की मुक्ति के लिए ही प्रयत्नशील नहीं रहता बल्कि दूसरों की मुक्ति के लिए भी निरंतर सक्रिय रहता है। आज देश–देशांतर में श्रीमद् प्रभु की यशकीर्ति फैल रही है तो इसलिए कि उन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी को अपना कुटुम्ब माना और प्रत्येक जीव के कल्याण को अपना परम धर्म। यह उदारता और विशाल हृदयता ही श्रीमद् प्रभु के संतत्व की पहचान है। ऐसा लगता है आज वे देवत्व की ऊँचाई पर विराजे हैं और प्रत्येक शरणागत व्यक्ति के जीवन को समृद्धि एवं आनन्द प्रदान कर रहे हैं। वस्तुत: इस उन्मुक्त दाता भाव में ही प्रभु की दिव्य महिमा परिलक्षित होती है।

श्रीमद् राजचंद्र एक लोकोत्तर महापुरुष थे। वे मात्र तैंतीस वर्ष की अल्पायु लेकर धरती पर आए थे लेकिन उन्होंने अपने विचारों से भविष्य की अनेक पीढ़ियों का कल्याण कर दिया। उनके आध्यात्मिक विचारों से संसारी जीवन दृष्टि, मुमुक्षु आत्महित का मार्ग और उच्चकोटि के साधक तपश्चर्या की प्रेरणा पाते हैं। श्रीमद् प्रभु के यहाँ अध्यात्म का अर्थ एक परम पवित्र एवं उदात्त की दिशा में जीवन का रूपान्तरण है। प्रभु के विचार एवं भावसानिध्य से सत्य के अनुशीलन की प्रेरणा मिलती है, कषाय धुलते हैं, भोग लालसा क्षीण होती है, चित्त अनासक्त एवं शांत बनता है, संयम, धैर्य, क्षमा, करुणा जैसी सद्वृत्तियों का जन्म होता है और इन सबकी परिणति ज्ञान एवं वैराग्य बोध में होती है। श्रीमद् प्रभु के पावन सानिध्य से अंधश्रद्धा का लोप होता है, सत्श्रद्धा प्रकट होती है और एक तरह से मनुष्य संसार में दूसरा जन्म ग्रहण करता है।

मेरा श्रीमद् प्रभु के साथ संबंध मात्र पाँच छ: वर्ष पुराना है। मैं निस्संकोच स्वीकार करता हूँ कि वे दाता हैं और मैं याचक। मैं संसारी तृष्णाओं में फंसा और अपनी ही कमजोरियों से संघर्ष करता एक साधारण मनुष्य हूँ और प्रभु परमार्थ की प्यास जगाने वाले महात्मा। मैं प्राय: उनसे अपने अन्त:करण में समता भाव के विकास एवं स्वयं को निर्विकार बनाने के लिए प्रार्थना किया करता हूँ। मैं जब भी दर्शन और जीवन व्यवहार से

जुड़ी गूढ जिज्ञासाओं को लेकर श्रीमद् प्रभु की शरण में गया हूँ मेरे न केवल संशय मिटे हैं बल्कि समाधानस्वरूप जीवन को अनुशासित एवं व्यवस्थित करने की उत्प्रेरणा भी मिली हैं। मैंने आत्मकल्याण के उद्देश्य से श्रीमद् प्रभु के आध्यात्मिक विचारों के महासागर में से कुछ मुक्ता-मोती निकाले हैं, जिन्हें मैं अज्ञान के अंधेरों से निकलने के लिए प्रकाश पुंज के रूप में निरूपित करता हूँ और इन्हीं को मैं अपना जीवन दर्शन मानता हूँ।

सर्वप्रथम श्रीमद् प्रभु सचेत करते हैं कि मानव जीवन दुर्लभ और दुष्प्राप्य है इसलिए यह सबसे मूल्यवान है। बीता हुआ एक क्षण भी वापस नहीं आता। ऐसे में प्रत्येक पल का सार्थक उपयोग करना चाहिए। व्यर्थ बिताया एक क्षण एक अमूल्य कौस्तुम को खो देने की तरह है। प्रभु विश्वास दिलाते हैं कि आत्मा भले ही दिखाई नहीं देती लेकिन उसका अस्तित्व है और वह नित्य है। एक तरह से ईश्वर आत्मा का ही पर्याय है। हमें एकत्व बुद्धि के भ्रम के कारण आत्मा और शरीर समान लगते हैं लेकिन दोनों तलवार और म्यान की तरह अलग-अलग हैं। प्रभु आश्वस्ति देते हैं कि आत्मा को कर्म का कर्ता भले ही कहें लेकिन वो कर्म का भोक्ता नहीं है। यदि आत्मा में राग द्वेष के विकार नहीं हैं तो कर्म बंधन संभव ही नहीं है। चाहे अमृत हो या विष जो भी इनका सेवन करता है, उसे इनका फल भोगना ही पड़ता है। इसी तरह शुभ-अशुभ कर्मो के फल को भी इनके कर्ता को अनिवार्यत: भोगना ही पड़ता है। श्रीमद् प्रभु स्पष्ट करते हैं कि कर्मफल का दाता ईश्वर नहीं है। कर्म अपने स्वभाव के

मानव जीवन दुर्लभ और दुष्प्राप्य है इसलिए यह सबसे मूल्यवान है। बीता हुआ एक क्षण भी वापस नहीं आता। ऐसे में प्रत्येक पल का सार्थक उपयोग करना चाहिए। व्यर्थ बिताया एक क्षण एक अमूल्य कौस्तुम को खो देने की तरह है। प्रभु विश्वास दिलाते हैं कि आत्मा भले ही दिखाई नहीं देती लेकिन उसका अस्तित्व है और वह नित्य है। एक तरह से ईश्वर आत्मा का ही पर्याय है। हमें एकत्व बुद्धि के भ्रम के कारण आत्मा और शरीर समान लगते हैं लेकिन दोनों तलवार और म्यान की तरह अलग-अलग हैं।

अनुसार शुभ-अशुभ फल देकर ही आत्मा से विलग होता है। अत: हम अनीति को छोड़कर नीति स्वीकार करें यही आत्मकर्तव्य है।

श्रीमद् प्रभु दृष्टि बोध देते हैं कि चैतन्य से परिपूर्ण शुद्ध आत्मा को पाना ही मोक्ष है और जिससे आत्मा की शुद्धता प्रकट होती है, वही मोक्षमार्ग है। आत्मा के मोक्ष का उपाय सम्यक धर्म है और यह धर्म सर्वथा राग द्वेष से रहित और मतभेदशून्य होने पर उपलब्ध होता है। प्रभु संस्कारित करते हैं कि धर्म एक सद्वृत्ति के रूप में धार्मिक मनुष्य के दैनंदिन कार्य और आचार व्यवहार में झलकना चाहिए। मोक्ष के लिए किसी को अपना धर्म छोड़ने की जरूरत नहीं है। सब अपने-अपने धर्म में रहकर ही मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

एक और जीवन का सूत्र जो मैंने श्रीमद् प्रभु के भाव-सानिध्य से पाया वो ये कि परमपद पाने के आकांक्षी व्यक्ति को सदा सत्य पुरुषार्थ पर भरोसा रखना चाहिए और संसार में रहते हुए भी आत्म तत्व की खोज बन्द नहीं करनी चाहिए। प्रभु स्वयं संसार में रहे लेकिन संसारी नहीं बने और जौहरी का व्यवसाय करते हुए भी वे धर्मकुशलता और व्यवहार कुशलता दोनों को साधे रहे। वे अपनी पेढी पर बैठे हुए लाखों का व्यवसाय भी कर लेते थे और आत्मकल्याण की साधना भी। अपने जीवन अनुभव के आधार पर ही प्रभु ने प्रतिपादित किया कि व्यापार या ऐसी कोई भी क्रिया यदि कर्तव्य हो तो उसे भी एकाग्रतापूर्वक करना चाहिए। अन्तर में आत्मचिन्तन तो श्वास-प्रश्वास की तरह स्वाभाविक और सहज रूप से निरन्तर चलते ही रहना चाहिए। इस तरह सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ आत्म चिन्तन करते हुए ही हमें बाहरी जीवन और बाहरी कर्म व्यवहार में संलग्न होना चाहिए। संसार में रहते हुए यही परमार्थ को साधने का मार्ग है।

श्रीमद् प्रभु के आध्यात्मिक विचारों से हमारे हृदय और मस्तिष्क को खुराक मिलती है। उनकी दृष्टि में आत्मभ्रांति के समान कोई रोग नहीं हैं। सद्गुरु के समान कोई वैद्य नहीं हैं। सद्गुरु की आज्ञा के समान कोई उपचार नहीं है। विचार और ध्यान के समान कोई औषधि नहीं है। प्रभु की इस संत वाणी से ज्ञानामृत झरता है जो संसार के प्रत्येक प्राणी को तारने में समर्थ है। इसी में मानव जाति को ऊपर उठाने की शक्ति निहित है और यही शाश्वत शांति पाने का मार्ग है।❑

जेनरेटिव एआई के उपयोग पर रेडियो जर्मनी का रुख

❑

❑

मानुएला कास्पर क्लैरिज

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पत्रकारिता को बदल देगी। रेडियो डॉयचे वेले अर्थात रेडियो जर्मनी की मुख्य संपादक मानुएला कास्पर क्लैरिज बता रही हैं कि उनका संस्थान एआई साधनों का इस्तेमाल कैसे करेगा और कैसे पत्रकारिता के हरेक पहलू में पत्रकारों की भूमिका अहम बनाई राखी जायेगी। ❑सं.

डॉयचे वेले इस साल 70 साल का हो गया। शुरुआत से ही हम अपने दुनिया भर के श्रोताओं को भरोसेमंद, बेहतरीन और स्वतंत्र पत्रकारिता उपलब्ध कराने के स्पष्ट मिशन को लेकर चले हैं। जिन रास्तों पर चल कर हमने यह किया है वह बीते दशकों में बदले हैं। हम लगातार विकसित हो रहे हैं। रेडियो से टेलिविजन और इंटरनेट से लेकर सोशल मीडिया तक जानकारी जुटाने और पत्रकारिता के लिए कंटेंट बनाने के तरीकों में हमने खुद को इस तरह ढाला है कि आप तक पहुंच सकें। हालांकि हमारी उच्च दर्जेकी पत्रकारिता के मानक हमेशा एक ही रहे हैं।

अब हम लोग अगले बड़े परिवर्तन के बीच में हैं। जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक विध्वंसकारी ताकत है। बहुत सारे उद्योग इस बड़े परिवर्तन का अनुभव करेंगे या फिर पहले से ही करना शुरू कर चुके हैं और पत्रकारिता कोई अपवाद नहीं है।

पारदर्शिता हमारे मानकों का सबसे मजबूत स्तंभ है, तो मैं पत्रकारिता में जेनेरेटिव एआई को लेकर हमारी सोच आपके साथ साझा करना चाहूंगी।

पत्रकारों के हाथ में नियंत्रण

डॉयचे वेले की कड़ी प्रतिबद्धता ऐसी पत्रकारिता के लिए है जिसे लोग बनाते हैं। हम जेनरेटिव एआई को ऐसे साधन के रूप में नहीं देखते जो हमारे पत्रकारों और संपादकों के काम की जगह ले ले। इसका मतलब है कि अगर आप डॉयचे वेले की पत्रकारिता से निकली किसी खबर को पढ़, देख या सुन रहे हैं तो आप निश्चिंत हो सकते हैं कि इसके लिए जिम्मेदार डॉयचे वेले के पत्रकार हैं।

हमारे पत्रकार हमारी गुणवत्ता की गारंटी हैं। स्वतंत्रता, परिश्रम, पारदर्शिता, सम्मान, विचारों की बहुलता और विविधता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता हर हाल में लागू होती है। इसके साथ साथ हम यह भी परखना चाहते हैं कि एआई के उपकरण हमारी पत्रकारिता में कैसे सहयोग दे सकते हैं।

डॉयचे वेले पहले से ही अपने पत्रकारों की मदद के लिए एआई आधारित उपकरण इस्तेमाल कर रहा है। उदाहरण के तौर पर ये उपकरण खबरों के लिए बड़ी संख्या में आंकड़ों के विश्लेषण और एक भाषा की कहानी को दूसरी भाषा में अनुवादित करने में हमारी मदद करते हैं। हम एआई का इस्तेमाल सर्च इंजन में हमारी कहानियों के प्रदर्शन को बेहतर करने और सोशल मीडिया सहकर्मियों को हेट स्पीच की

तुरंत पहचान करने में कर सकते हैं। एआई के जरिए तैयार होने वाले वीडियो के सबटाइटल उन्हें बहुत ज्यादा लोगों तक पहुंचाने में मदद कर सकते हैं।

हम इन प्रगतियों को इस्तेमाल करने के तरीकों पर नजर रखेंगे। हालांकि हमारे पत्रकारों का इन उपकरणों पर नियंत्रण बना रहेगा और वो किसी भी चीज को प्रकाशित करने से पहले उसकी समीक्षा करेंगे। हम एआई को इस्तेमाल करने के तरीकों के बारे में हमेशा मुक्त और पारदर्शी रहेंगे।

एआई चैटबॉट्स, जैसे कि चैटजीपीटी, कभी भी सूचना का भरोसेमंद स्रोत नहीं हो सकते। ये प्रेरणा दे सकते हैं लेकिन भरोसेमंद जानकारी नहीं। वे गलतियां करते हैं और जानकारी कहां से मिली इसके बारे में पारदर्शी नहीं होते। हम चैटबोट से आने वाली हर जानकारी को उसी तरह से परखेंगे जैसे कि दूसरे स्रोतों से आने वाली जानकारी को करते हैं। हम एआई चैटबॉट्स को जानकारी के सीधे स्रोत के रूप में इस्तेमाल नहीं करेंगे।

हम फैक्ट चेक करने की अपनी क्षमता को भी बढ़ाएंगे। जेनरेटिव एआई गलत जानकारी पैदा करने और उसे दुनिया भर में फैलाने को आसान बनाती है। पत्रकार के रूप में यह हमारा काम है कि इस गलत जानकारी का सच बताएं। एआई से रची तस्वीरें हम एआई के द्वारा बनाई गई तस्वीरों को छापने का कोई महत्व नहीं देखते। इसका मतलब है कि अपने काम के लिए हम इस तरह की तस्वीरें नहीं बनाएंगे। अगर हमें किसी और की बनाई एआई वाली तस्वीरों पर रिपोर्ट करना होगा तो हम स्पष्ट रूप से बताएंगे के ये तस्वीरें एआई से बनाई गई हैं और असली नहीं हैं।

हालांकि हम जेनरेटिव एआई का इस्तेमाल इलस्ट्रेशन या डाटा विजुअलाइजेशन को तैयार करने या बेहतर बनाने में कर सकते हैं। ❑

अहिंसा से ही सामाजिक समता संभव

कृष्ण बिहारी पाठक

अप्रत्यक्ष हिंसा भी उतनी ही विनाशक, विध्वंसक और नकारात्मक होती है जितनी कि प्रत्यक्ष हिंसा। अप्रत्यक्ष हिंसा वैचारिकता के अमूर्त कलेवर में सामने आती है, इसलिए अधिकांश मामलों में इसे चिन्हित करना आसान नहीं होता। फलस्वरूप उसके निवारण या उन्मूलन की राह और भी कठिन हो जाती है।

सम्प्रेषण या संवाद के दौरान किसी को बातों से या विचार संकेतों से कष्ट पहुंचाना हिंसक सम्प्रेषण कहलाता है। विडंबना यह है कि अधिकांश मामलों में हिंसक आंपरेशन करने वाला अपने द्वारा की गई इस हिंसा से अनभिज्ञ रहता है।

मानवता के इतिहास या वर्तमान दौर को देखें तो पता चलता है कि शारीरिक या प्रत्यक्ष हिंसा का उद्गम सड़ाइब हिंसक सम्प्रेषण से ही हुआ। इसलिए विश्व शांति, मानवीय सौहार्द, समन्वय और अहिंसा के प्रतिष्ठापन के लिए हिंसक सम्प्रेषण से मुकटीऊ के सतत प्रयास आवश्यक हैं। हिसनक सम्प्रेषण से मुक्ति या निवारण का सबसे अच्छा तरीका यही है कि हिंसमुक्त सम्प्रेषण को अपने दैनंदिन व्यवहार में अपनाया जाय।

हिंसमुक्त सम्प्रेषण के महत्व को देखते हुए देश के शिक्षाविदों, नीति नियंताओं और मनीषियों ने बालक तथा विद्यालयी परिवेश में हिंसमुक्त सम्प्रेषण को अपनाने पर बाल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षार्थी की जिज्ञासा को उन्मुक्तता प्रदान करने तथा उसे संवाद के अवसर प्रदान करने आधी प्रावधानों की तह में बालक को हिंसा और भय से पूर्णतः मुक्त रखने की अपेक्षा जतायी गयी है।

आधुनिक अध्ययन में हिंसमुक्त सम्प्रेषण के लिए चार घटक बताए गये हैं। पहला अवलोकन अर्थात देखना – निष्पक्ष और पूर्वाग्रह से मुक्त होकर। दूसरा भावनाओं की पहचान और सम्मान, तीसरा जरूरतों की समझ तथा चौथा आदेशात्मक की जगह अनुरोध।

अतः अहिंसक सम्प्रेषण को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। ❑

('अणुव्रत' पत्रिका से साभार। संपादित)

लेख

एक समर्पित और प्रतिबद्ध अधिकारी का संतोष

डॉ. समित शर्मा

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी डॉ. समित शर्मा ने अपने तबादले पर फ़ेसबुक वाल पर लिखे आलेख को हम यहां साझा कर रहे हैं। सरकारी सेवा को लोक सेवा मान कर उसी भावना से काम करने वाले इस अधिकारी पर किसी को भी गर्व हो सकता है। सं

मुझे याद है जब जेनेरिक दवाई योजना के लिए डॉक्टर्स को मोटिवेट करना होता था तो मेरी स्पीच इस वाक्य से शुरू होती थी, दुनिया के सर्वाधिक पुण्य के तीन काम है : पहला है प्यासे व्यक्ति को पानी पिलाना, दूसरा है भूखे को भोजन कराना और तीसरा है रोगी को दवा देना।

आम लोगों को कम कीमत पर जेनेरिक दवा उपलब्ध कराने का काम कई सालों तक करने का अवसर मिला। पहले जिला कलेक्टर के रूप में और फिर एमडी, एन आर एच एम और राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन के एम डी के रूप में। पुण्य भी मिला व दुआएं भी। साथ में टीम को राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री पुरस्कार और यश भी मिला।

पर सबसे बढ़कर इस बात का आत्म संतोष मिला कि चार लाख लोग रोज निःशुल्क जेनेरिक दवाएं लेते हैं और एक लाख लोग निःशुल्क जांच कराते हैं। राजस्थान के बाद 20 अन्य राज्यों में यह योजना लागू हुई और वहां पर हमारी टीम के द्वारा तैयार किया गया ई औषधि सॉफ्टवेयर ही उपयोग में लिया जाता है। आज भी इस योजना में हमारा प्रदेश पूरे देश में नंबर वन है। मैं उस विजयी टीम के समस्त डॉक्टर्स, फार्मासिस्ट, नर्सिंग स्टाफ और ऑफिसर्स का आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिनकी वजह से यह पुण्य कार्य सफल हुआ।

भारतीय प्रशासनिक सेवा कि यह खूबी है की आपको विभिन्न सेवा क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर मिलता है। और मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझता हूं कि मुझे एक करोड़ से अधिक लाभार्थियों वाले समाज कल्याण विभाग में 5 वर्ष तक कार्य करने का अवसर मिला। मुझे इस बात का गर्व है कि इसे मैंने स्वेच्छा से चुना। और जब पिछले 75 वर्षों में विभाग में पद स्थापित आईएएस अधिकारियों की सूची बनाकर उसके सम्मुख उनका कार्यकाल लिखा जाएगा तो इस लिस्ट में मेरा नाम सबसे ऊपर होगा।

आईएएस संभवतः दुनिया की सबसे चुनौती पूर्ण सेवाओं में से एक है, किंतु प्रत्येक चुनौती में एक अवसर भी छिपा होता है। यहां आई टी का उपयोग करके राजकीय योजनाओं को सरल, सुलभ, सुविधापूर्ण, त्वरित, संतोषजनक, सम्मान के साथ और पारदर्शी तरीके से लाभार्थियों तक

पहुंचने का अवसर मिला। विभाग की पूरी टीम ने संकल्पित होकर जीरो टॉलरेंस फॉर करप्शन की नीति और निल पेंडेंसी की अवधारणा को भी सफल बनाया।

'की परफॉर्मेंस इंडिकेटर्स' (KPI) के आधार पर जिलों की मासिक रिपोर्ट एवं रैंकिंग, अटेंडेंस मॉनिटरिंग ऐप के माध्यम से जिओ फेंसिंग तकनीक का उपयोग कर सेवा प्रदाताओं की कार्यस्थल पर समय पर उपस्थिति सुनिश्चित करना, फैसियल रिकॉग्निशन तकनीक का उपयोग कर पेंशन और छात्रवृत्ति के आवेदन घर बैठे ही हो सके ऐसी व्यवस्था कर पाना, आर्टिफिशीयल इंटेलिजेंस का उपयोग करके एक्स-रे फिल्म में सिलिकोसिस है या नहीं की पहचान कर पाना आदि नवाचार टीमवर्क से ही संभव हो पाये।

जनहित के सभी प्रयोगों व नवाचारों को एक पुस्तक के रूप में संकलित कर पाया जिसका नाम रखा 'सामाजिक क्षेत्र में डिजिटल क्रांति की शुरुआत'। इन सब के लिए मैं सदैव विभाग के कर्मठ और निष्ठावान अधिकारियों और कार्मिकों का सदा आभारी रहूंगा।

स्थानांतरण राजकीय सेवा का अभिन्न अंग है। यह बात समझते हुए भी और इसका पूर्व आभास होते हुए भी जब आज विभागीय मीटिंग के दौरान ट्रांसफर आर्डर आए तो मेरा मन आप लोगों के बीच में से जाने का नहीं था। ऐसे लगने लगा था जैसे हम एक ही परिवार के सदस्य हैं। अपनों से बिछड़ना सदैव कष्ट पूर्ण होता है। यह परीक्षा की घड़ी थी, एक तरफ मोह और दूसरी तरफ राजधर्म। प्रत्येक राजकीय अधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे जहां भी पद स्थापित किया जाए वह उस दायित्व का निर्वहन पूर्ण कर्तव्य निष्ठा, ईमानदारी, समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ करे। उसका कार्य निष्पादन उत्कृष्ट और अन्य लोक सेवकों के लिए अनुकरणीय हो।

मार्टिन लूथर किंग ने कहा था कि यदि आपको सड़क की सफाई करने का कार्य भी दे दिया जाए तो आप उसे उस मेहनत से, उस लगन से, उस कर्तव्यनिष्ठा से करें जिस प्रकार माइकलएंजेलो पेंटिंग बनाया करते थे, जिस प्रकार बीथोवन संगीत की रचना करते थे, जिस प्रकार शेक्सपियर कविता लिखते थे और यदि आसमान से फरिश्ते गुजर रहे हो और वह नीचे जमीन पर झांके तो यह अवश्य पूछे कि वह व्यक्ति कौन है जिसने अपना काम इतनी उत्कृष्टता से किया है।

क्षणिक मोह के बाद यह स्मरण हुआ की यह तो एक अधिकारी की पब्लिक ड्यूटी है और यह तो वह कार्य है जो स्वयं परमपिता परमेश्वर ने मेरे इस जीवनकाल के लिए चुना है और सौंपा है।

शायद दुनिया के सर्वाधिक पुण्य कार्यों में पहले नंबर के काम को करने का समय आ गया है। शायद प्रभु इच्छा अनुसार लाखों लोगों तक पानी पहुंचाने के पवित्र कार्य के निमित्त बनने का समय आ गया है। शायद मन को मजबूत करके कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने का समय आ गया है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के परिवार से बिछड़ने का समय आ गया है।

आपके साथ बिताए गए जीवन के यह 5 साल और इसकी मधुर स्मृतियां मुझे हमेशा याद रहेंगे। यह एक ऐसा धन है जो आजीवन मेरे साथ रहेगा जिसे न चोर चुरा सकते हैं और ना डाकू लूट सकते हैं।

धन्यवाद। ❑

बापू ने कहा था

- आप मुझे जंजीरों में जकड़ सकते हैं, यातना दे सकते हैं, यहाँ तक की आप इस शरीर को नष्ट कर सकते हैं, लेकिन आप कभी मेरे विचारों को क़ैद नहीं कर सकते।
- निरंतर विकास जीवन का नियम है और जो व्यक्ति ख़ुद को सही दिखाने के लिए हमेशा अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है -
- वह ख़ुद को ग़लत स्थिति में पंहुचा देता है।
- आपकी मान्यताएँ आपके विचार बन जाते हैं, आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं, आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं, आपके कार्य आपकी आदत बन जाते हैं, आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं, आपके मूल्य आपकी नियति बन जाती है।
- जब मैं निराश होता हूँ, मैं याद कर लेता हूँ कि समस्त इतिहास के दौरान सत्य और प्रेम के मार्ग की ही हमेशा विजय होती है। कितने ही तानाशाह और हत्यारे हुए हैं और कुछ समय के लिए वह अजेय लग सकते हैं, लेकिन अंत में उनका पतन होता है। इसके बारे में सोचो-हमेशा। ❑

पर्यावरण

मनोरम सुगंध के फूलों वाला मौलश्री

❑

डॉ. देवदत्त शर्मा

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के उद्यान में लगे औषधीय पौधों और वृक्षों के परिचय के क्रम में हम इस बार 'मौलश्री' का परिचय दे रहे हैं। ❑सं.

मौलश्री एक मध्यम आकार का सदाबहार पेड़ है जो दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, और उत्तरी आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। भारत का मूलनिवासी यह पेड़ उपोष्णकटि बंधीय वर्षावनों में अच्छी तरह से बढ़ता है।

यह एक मध्यम आकार का पेड़ है जो 12-18 मीटर की ऊंचाई तक पहुंचता है। इसका तना गहरे दरारयुक्त भूरे या भूरे रंग की छाल से ढका होता है। इसकी शाखाएं ज़मीन से कुछ दूरी पर निकलती हैं और सभी दिशाओं में समान रूप से फैलती हैं, जिससे पेड़ को एक गोल, छतरी के आकार का छत्र मिलता है। इसकी पत्तियां सरल, आयताकार, गहरे हरे रंग की, चमकदार, लहरदार किनारों वाली मोटी होती हैं।

मौलश्री का पुष्पन मार्च से जुलाई तक होता है। इसके फूल अपने छोटे आकार और सूक्ष्म रंग के कारण अगोचर होते हैं लेकिन अत्यधिक सुगंधित होते हैं। बालों वाले और क्रीम रंग के, फूल तारे के आकार के होते हैं जो छोटे समूहों में व्यवस्थित होते हैं। बाह्यदल आठ होते हैं और पंखुड़ियां दो श्रृंखलाओं में व्यवस्थित होती हैं। पुंकेसर की संख्या आठ होती है।

मौलश्री (बकुल) फूल का नाम लेते ही उसके सुंगध से दिल और मन दोनों सुगंधित हो जाते हैं। इसके फूलों की एक विशेष बात यह है कि वे सूख जाने पर भी उनकी सुगंध नहीं जाती। यह 12 से 5 मीटर ऊँचा, सीधा, बहुशाखित, छायादार, सदाहरित पेड़ होता है। इसके फूल छोटे, पीले सफेद रंग के, ताराकार, सुगन्धित, लगभग 2.5 सेमी व्यास के होते हैं।

संस्कृत में इसे-बकुल, मधुगन्धि, चिरपुष्प, स्थिरपुष्प; हिन्दी में बकुल, मौलश्री, मौलसिरी, चिरपुष्प, स्थिरपुष्प; उर्दू में किराकुली, मुलसारी; उडिया में बोकुलो, बौला, बोउलो; कोंकणी में बोनवोल; कन्नड में पगडेमारा, बकुला; गुजराती में बरसोली, बोलसारी; तमिल में मगीलम, इलांची; तेलुगु में पोगडा, पोगड; बंगाली में बकुल; पंजाबी में मौलसारी; मलयालम में इन्नी, एलन्नी; मराठी में ओवल्ली, बकुल; अंग्रेजी में स्पेनिश चेरी, टेनजोंग ट्री तथा फारसी में मौलश्री कहते हैं।

इस पेड़ का उल्लेख विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ प्राचीन संस्कृत साहित्य में भी मिलता है।

इसकी लकड़ी बहुत मूल्यवान होती है। इसका फल खाया जाता है, और पारम्परिक औषधियों में इसका प्रयोग किया जाता है। मौलसिरी के अनेक औषधीय गुण हैं। आयुर्वेद में इसकी छाल, पत्तों, फूल, फल एवं बीज सभी का औषधीय उपयोग होता है।

यह प्रकृति से पित्त-कफ से आराम दिलाने वाला, स्तम्भक, कृमि को निकालने में मददगार, गर्भाशय की शिथिलता, सूजन एवं योनिस्राव को दूर करता है। इसके अलावा वस्ति एवं मूत्र मार्ग के स्राव और सूजन को कम करता है। मौलसिरी के फूल हृदय और दिमाग के लिए फायदेमंद होते हैं। इसकी फल तथा छाल पौष्टिक, रक्त-स्तम्भक, बुखार, विष और, कुष्ठ के कष्ट को कम करने तथा दांतों के लिए विशेष लाभकारी होते हैं। यह ग्राही, शीतल, कृमि के इलाज में मददगार , बलकारक, बुखार के कष्ट; सिरदर्द, मस्तिष्क की दुर्बलता, दांतों के रोग, दांत की दुर्बलता, अतिसार या दस्त, प्रवाहिका या पेचिश, कृमि, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, सुजाक या गोनोरिया तथा वस्ति या ब्लाडर के सूजन को कम करने में लाभप्रद होता है। बकुल के सूखे फल के चूर्ण को नाक से लेने से थकान या तनाव के कारण हुए सिरदर्द से आराम मिलता है।

चित्त को अति आनंद देने वाले मनोरम सुगंधित फूलों से युक्त बकुल को सदाहरित पेड़ माना जाता है। इसे यह सड़कों के किनारे तथा घरों के बगीचों में लगाया जाता है। ❑

सर्व सेवा संघ की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक जयपुर में संपन्न

नये समय की नई चुनौतियों का पूरी ताकत से सामना करने के जज़्बे की अभिव्यक्ति के साथ सर्व सेवा संघ की नई राष्ट्रीय कार्यसमिति की दो दिन की बैठक पिछले दिनों जयपुर में हुई। वर्धा स्थित इस संगठन की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक जयपुर में दूसरी बार थी।

सत्य और अहिंसा पर आधारित एक ऐसे समाज जिसमें मानवीय तथा लोकतान्त्रिक मूल्यों से जीवन अनुप्राणित हो, जो शोषण, दमन, अनीति और अन्याय से मुक्त हो तथा जिसमें मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए पर्याप्त अवसर हों के उद्देश्य से महात्मा गांधी की प्रेरणा एवं आचार्य विनोबा के मार्गदर्शन में सर्व सेवा संघ की स्थापना मार्च 1948 में वर्धा (महाराष्ट्र) में हुई थी।

कार्यकारिणी की बैठक संघ के अध्यक्ष चंदन पाल की अध्यक्षता में राजस्थान स्वायततशाषी संस्थान के गोविंद भवन में हुई जिसमें देश के विभिन्न प्रांतों से आये प्रतिनिधियों ने आपने-अपने कार्यों का विवरण दिया तथा सभी ने मिल कर नये ज़माने में सत्य और अहिंसा के मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये भविष्य के कार्यक्रमों की रूपरेखा पर गंभीर विमर्श किया। बैठक में वयोवृद्ध सर्वोदय नेता अमरनाथ भाई भी उपस्थित थे।

बैठक में महाराष्ट्र, गुजरात, कर्णाटक, ओडिशा, तेलंगाना, बंगाल, हरियाणा और राजस्थान के प्रतिनिधि मौजूद थे।

कार्यसमिति के उद्घाटन सत्र में अत्यंत आत्मीय माहौल में बैठक में भाग ले रहे सभी सदस्यों का भावभीना

स्वागत किया गया। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति की अध्यक्ष आशा बोथरा, जो सर्व सेवा संघ की कार्यसमिति की सदस्य भी हैं, ने सभी का आदर के साथ राजस्थानी खादी का शॉल ओढ़ा कर स्वागत किया और स्मृतिचिन्ह भेंट किये।

आशा बोथरा ने बताया कि सर्व सेवा संघ की स्थापना का उद्देश्य राज्य सत्ता की प्राप्ति के लिए होने वाली प्रतिद्वंद्विता सर्वथा निर्लिप्त रह कर काम करने का है। उसका उद्देश्य ऐसे लोकतंत्र के विकास और स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहना है, जिसका आधार दलीय राजनीति नहीं बल्कि शासन निरपेक्ष लोकनीति हो। संघ समाज में जाति, पंथ, संप्रदाय, वर्ण, लिंग, रंग, भाषा, देश आदि के कारण उत्पन्न होने वाले भेदभाव को स्वीकार नहीं करता। उसका प्रयत्न रहता है कि एक ऐसी जीवन पद्धति का विकास हो जिसमें मानव-मानव के बीच निरंतर समता और साझेदारी बढ़े, वर्गों का निराकरण हो, पूंजी और श्रम का विरोध मिटे तथा विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के अंतर्गत खादी, कृषि उद्योग, और पशु पालन जीविका के मुख्य साधन बने।

उन्होंने बताया कि संघ अपने कार्यक्रमों द्वारा शांति, प्रेम, मैत्री, करुणा और न्याय की उदात्त भावनाओं को जागृत करने का प्रयत्न करता है। अहिंसा की मर्यादाओं का पालन करते हुए संघ लोकशक्ति का निर्माण करने तथा सम्पूर्ण क्रांति द्वारा सर्वोदय की सिद्धि के लिए रचनात्मक कार्यक्रम और आवश्यकतानुसार सत्याग्रह का प्रयोग करता है। ❑

अनौपचारिका मंगवाने के लिए जरूरी जानकारी

ऑनलाईन सहयोग राशि के लिए बैंक का विवरण

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext.Jhalana Jaipur
I.F.S.C.Code : BARB0EXTNEH
(fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct,No. 98150100002077

सद्भावना सहयोग :
व्यक्तिगत 500/- रुपये वार्षिक
संस्थागत 1000/- रुपये वार्षिक
मैत्री समुदाय 5000/- रुपये

समाज में आपसी संवाद का घटना चिंताजनक

सर्व सेवा संघ की राष्ट्रीय कार्यसमिति में भाग लेने वाले उसके मंत्री अरविन्द अंजुम जयपुर से प्रस्थान करने से पहले राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में भी आये जहां उनसे चाय पर चर्चा हो गई।

चिंतक, लेखक और पत्रकार भाई अंजुम का मानना था कि परेशान करने वाली बात यह है कि वर्तमान में देश में सामूहिक, वैचारिक और जनतान्त्रिक चर्चा का स्पेस खत्म होता जा रहा है और लोगों के बीच संवाद घट रहा है। प्रत्येक अपनी ही बात पर अड़ा हुआ नजर आता है और कोई भी दूसरे की बात धैर्य से सुनने को तैयार नहीं लगता। उनको लगता है कि भारत में सांस्कृतिक साम्राज्यवाद पसर रहा है जो इस देश की हजारों वर्षों की सनातन सांस्कृतिक परंपरा के विरुद्ध है। उन्हें इस बात की पीड़ा थी कि फंतासी को इतिहास बनाया जा रहा है। उनका कहना था कि ऐसा करना खुद को महिमामंडित करने के लिये ही होता है। जिनका अपना वर्तमान नहीं होता वही इतिहास में अपनी महिमा खोजते हैं। उनकी यह भी मान्यता थी कि लोगों को इतिहास की श्रेष्ठता का बोध करा कर बहलाया जा रहा है। युद्ध और उपभोक्तावाद लोगों के सिर चढ़ गया लगता है।

मगर वे मानते हैं कि यह गुब्बारा फूटेगा और झूठ का जंजाल ध्वस्त होगा।

सनातन धर्म के मूल्य स्थापित होंगे। उनका कहना था कि धर्म का प्राण सत्य और अहिंसा के मूल्य होते हैं और धर्म की बुनियाद मानवीय सनातन मूल्यों पर ही टिकी होती है।

भाई अरविन्द अंजुम का कहना था कि सत्य और न्याय के पक्ष में खड़े होने का माहौल बनाने की जरूरत है। साथ ही सांप्रदायिकता, नफ़रत और विभाजन की विचारधारा के खिलाफ जम कर आवाज़ उठाने की जरूरत है। इसमें सर्व सेवा संघ अपनेए भूमिका निभाने में पीछे नहीं है। ❑

स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा क्लासीफाइड प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित तथा 7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004 से प्रकाशित। संपादक- राजेन्द्र बोड़ा